पत्र सूचना शाखा

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

मत्स्य आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ के 10वें इण्डियन फिशरीज अक्वाकल्चर फोरम का राज्यपाल ने उद्घाटन किया

राज्यपाल ने मत्स्य पालकों के विकास के लिए अलग मंत्रालय बनाने का सुझाव दिया

लखनऊः 12 नवम्बर, 2014

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल, श्री राम नाईक आज मत्स्य आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ के 10वें इण्डियन फिशरीज अक्वाकल्चर फोरम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डाॅ0 एस0 अय्यपन, महानिदेशक, आई0सी0ए0आर0, डाॅ0 सी0 विरापट, बैंकाॅक, डाॅ0 बी0 मीना कुमारी, उपमहानिदेशक मत्स्य, आई0सी0ए0आर0 सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण, विदेश से आये प्रतिनिधिगण व मछली पालन से जुडे किसान भी उपस्थित थे। समारोह में राज्यपाल ने उत्कृष्ट कार्य हेतु विभागीय अधिकारियों श्री पी0सी0 दास एवं श्री पी0के0 साहू को तथा प्रगतिशील मत्स्य पालक श्री परवेज खांन, बाराबंकी व शहनवाज हक, सिद्धार्थनगर को अंगवस्त्र व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

राज्यपाल ने अपने सम्बोधन में कहा मत्स्य उत्पादन में भारत दूसरे स्थान पर है इस दृष्टि से यह संगोष्ठी महत्वपूर्ण है। मत्स्यपालकों की महत्ता को देखते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि मत्स्य के लिये अलग से मंत्रालय होना चाहिये जो उनकी समस्याओं एवं सुदृढ़ विकास के लिये काम करे। मत्स्य पालक सहकारिता के आधार पर कार्य करें। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी के निष्कर्ष से मछुवारों को अवगत कराया जाये जिससे वे उसका लाभ उठा सकें।

श्री नाईक ने कहा कि जनप्रतिनिधि रहते हुए उन्होंने तटीय मछुवारों के विकास के लिये कार्य किया है। उन्होंने कहा कि मछुवारों को कम दाम पर डीजल, अन्य कृषकों की भांति कम ब्याज पर ऋण, समुद्री मछवारों की सुरक्षा के लिये व्यापक कदम तथा उन्हें शिक्षित करने की भी जरूरत है जिससे उनका व्यवस्थित रूप से विकास हो सके।

डाॅ0 एस0 अय्यपन, महानिदेशक, आई0सी0ए0आर0 ने कहा कि मत्स्य पालकों एवं मछुवारा समुदाय के लोगों के विकास के लिये एक रोडमैप तैयार करने की जरूरत है। प्रगतिशील तकनीक के उपयोग से आय में वृद्धि हो सकती है। उन्होंने कहा कि मत्स्य व्यवसाय में लगे युवाओं और महिलाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में उपमहानिदेशक डाॅ0 बी0 मीना कुमारी व डाॅ0 विरापट सहित अन्य लोगों ने भी विचार रखे। राज्यपाल ने कार्यक्रम में विभागीय प्रकाशन का विमोचन किया तथा मत्स्य प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया।

Souvenir

10th Indian Fisheries and Aquaculture Forum
Towards Responsible Aquaculture and Sustainable Fisheries
November 12-15, 2014
Co-sponsors
The 10th Indian Fisheries and Aquaculture Forum
(10ifaf)
Towards Responsible Aquaculture and Sustainable Fisheries
November 13-15, 2014
Venue:
ICAR-National Bureau of Fish Genetic Resources
(NBFGR), Lucknow, India